बुद्धवर्ष २५४३, फाल्गुन पूर्णिमा, २० मार्च, २००० वर्ष २९ अंक ९

धम्मवाणी

पतिरूपदेसवासो च, पुब्बे च कतपुञ्ञता।
अत्त-सम्मापणिधि च, एतं मङ्गलमुत्तमं॥

– मङ्गलसुत्त - ३

उचित देश में निवास, पूर्व जन्मों का संचित-पुण्य और अपने आप में सम्यक रूप से समाहित होना – यह उत्तम मंगल है।

आत्म-कथन

धर्मदेश की तीर्थ-यात्रा

पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की यह प्रबल धर्मकामना थी कि म्यंमा को भारत से विपश्यना का जो अनमोल धर्म रत्न मिला, उस ऋण को चुकाते हुए यह विद्या भारत को पुनः लौटायी जाय। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि आज के भारत में ऐसे अनेक लोग जन्मे हैं जो कि अमित पुण्यपारमी के धनी हैं और वे अपनी इस पुरातन अनमोल विद्या को खुले दिल से स्वीकार करेंगे और इसे संपूर्ण भारत में ही नहीं, बल्कि सकल विश्व में प्रसारित करने के काम में जी-जान से जुट जायेंगे। उन्हें यह भी विश्वास था कि विश्व में भी स्थान-स्थान पर ऐसे पारमी संपन्न लोग जन्मे हुए हैं जो इस अनमोल रत्न की प्रतीक्षा में हैं। इसे पाकर वे धन्य होंगे और इसके प्रसारण में प्रभूत योगदान देंगे। यही हुआ। उनकी धर्ममयी मंगल कामना पूरी हो रही है।

जैसे पूज्य गुरुदेव के मन में यह धर्मकामना जागी, वैसे ही मेरे मानस में भी एक धर्मकामना जागी कि पिछले लगभग दो सहस्राब्दियों के अंतराल के पश्चात जिस देश से भारत को अपनी पुरातन विपश्यना संपदा पुनः प्राप्त हुई उस देश के प्रति भारत के विपश्यी साधक अपनी कृतज्ञता प्रकट करें। इसके साथ-साथ सारे विश्व में भी जिन लाखों लोगों ने विपश्यना से लाभ उठाया है, वे भी म्यंमा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करें। इस धर्मकामना की पूर्ति स्वरूप गुरुदेव के जन्म-शताब्दी वर्ष में इस नई सहस्राब्दी के शुभारंभ होते ही धर्मभूमि म्यंमा के लिए एक ऐतिहासिक तीर्थ-यात्रा की महत्त्वपूर्ण योजना बनी। यह सारा कार्यक्रम बहुत कम समय में ही निश्चित किया गया और यह आशा की गयी कि भारत तथा विश्व के विभिन्न देशों से दो-ढाई सौ विपश्यी साधक इसमें सम्मिलित हो पायेंगे। परंतु यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि इस धर्मयात्रा में **पांच महाद्वीपों** के ३२ देशों से लगभग साढ़े सात सौ तीर्थयात्री यांगों पहुँच गये। धम्मजोति के विश्व सम्मेलन में सम्मिलित होकर उनमें से अनेक धर्मयात्रा पर निकल पड़े। यात्रा में यथासंभव सुविधा दिये जाने का प्रयास करते हुए भी उन्हें बेशुमार कठिनाइयों में से गुजरना पड़ा। परंतु इन धर्मपुत्रों और धर्मपुत्रियों के प्रफुल्ल-प्रसन्न चेहरे और मेरी जन्मभूमि के प्रति उनके मन में जागा हुआ अपार सम्मान का भाव देखकर हृदय गद्गद हुआ।

अब तक म्यंमा तथा अन्य बुद्धावलंबी देशों से तीर्थयात्री भारत आते रहे हैं। यह इतिहास का पहला अवसर है कि भारत और विश्व के सैकड़ों लोग तीर्थयात्रा के लिए म्यंमा गये।

धम्मजोति में सामूहिक साधना करते हुए सद्धर्म की जिन पावन तरंगों का साधक-साधिकाओं को अनुभव हुआ उससे वे अत्यंत आह्लादित हुए। बाहर से आए विपश्यी साधक-साधिकाओं के साथ स्थानीय विपश्यी भी इन सामूहिक साधनाओं में बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए। परम पवित्र श्वेडगोन पगोडा पर ध्यान करते हुए इस विशाल विपश्यी परिवार ने जिस विपुल प्रीति-प्रमोद की अनुभूति की, उसका वर्णन उनमें से अनेकों के मुँह से सुनकर मन आह्लादित हुआ। श्वेडगोन स्तूप के ट्रस्टी और प्रबंधक धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने सूर्योदय के पूर्व ऊषाकाल और रात्रि को ९ बजे के पश्चात जब कि स्तूप जनता के लिए बंद हो जाता है, तब इन बहुसंख्यक विपश्यी साधकों को निर्विघ्न सामूहिक साधना करने की सुविधा प्रदान की। भगवान की पावन के शधातु को अपने गर्भ में धारण किये हुए विश्व का यह महानतम पावन स्तूप धर्म की तरंगों से सतत तरंगित रहता है, जिससे साधकों के अंतर्मन में भी अनित्यबोध की प्रबल धर्म तरंगें लहरा उठीं। इसके अतिरिक्त ईज्या म्यांइ के इंटरनेशनल मेडीटेशन सेंटर में जहां कि मुझे पूज्य गुरुदेव के चरणों में बैठकर विपश्यना मिली और जहां मैं इस विद्या में यथाशक्ति परिपक्व हो सका, उस पावन केंद्र पर भी साधकों ने सामूहिक ध्यान किया। वहां के आचार्य और मेरे धर्मबंधु ऊ टीं यी तथा मदर सयामा का आभार मानते हैं कि उन्होंने यह सुविधा प्रदान की। गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के प्रति असीम कृतज्ञता और श्रद्धा प्रकट करते हुए साधक वहां की पावन तरंगों से अत्यंत लाभान्वित हुए।

नदी पार डल्ला गांव में सयातैजी का विपश्यना केंद्र अब भी कायम है। वहां के विशुद्ध वातावरण में भी साधना करके सबने धन्यता अनुभव की।

तीर्थयात्रियों का यह समूह चैटियों पहाड़ी पर भी गया। वहां के विस्मयजनक शैल शिखर पर बने स्तूप और उसके आसपास की पावन धर्मतरंगों से आप्लावित विशुद्ध वातावरण में साधकों ने साधना की और ऊंची पहाड़ी पर चढ़ने का जो शारीरिक श्रम था

वह साधना से तत्काल काफूर हो गया। सभी आह्लाद से भर उठे।

यात्रियों का समूह, बगो होता हुआ मेरी जन्मभूमि मांडले पहुँचा। वहां धम्ममण्डप विपश्यना केंद्र में साधना कर संतुष्ट प्रसन्न हुए। रात्रि के समय महाम्यामुनि मंदिर के पावन प्रांगण में जो सामूहिक साधना हुई उसका अनुभव अत्यंत अलौकिक रहा। परम पूज्य अरहंत धर्मदर्शी (असिं अरहं) की तपोभूमि सगाईं पहाड़ी की यात्रा भी अत्यंत कल्याणकारिणीरही। सीतगू सयाडो जाणेस्सरजी के विहार में भी सामूहिक साधना की धर्मतरंगें अत्यंत प्रभावशाली थी। पूज्य सयाडो के स्नेहभरे आशीर्वचन और उनके मैत्रीपूर्ण आतिथ्य से सारा विपश्यी परिवार अत्यंत प्रसन्न प्रमुदित हुआ।

वहां से सब मोंय्वा गये। वहां साधकों ने गंभीर सामूहिक साधना की। उसके समीप ही लैडीगांव गये, जो कि बड़े दादा गुरु लैडी सयाडोजी की जन्मभूमि, और कर्मभूमि रही। वहां से नदी पार करके जिस पहाड़ी पर वे तपा करते थे, वहां तक की पावन तीर्थयात्रा भी की। जिस महान संत की कृपा से यह विद्या इस युग में पुनः जागृत और जनप्रसारित हुई, उसके उपकार को याद करके सभी के हृदय कृतज्ञता से भरे थे। साधक मंडली चौसे में अरहंत वेबू सयाडो के विहार की भी यात्रा करके पुण्यभागिनी बनी।

हमारे साथ मोगोक थोड़े से ही लोग जा सके। जो भी गये, वे आनंद विभोर हो उठे। वहां विपश्यना के दोनों केंद्र –धम्मरतन तथा धम्मकुट में सामूहिक साधनाएं हुईं। इतनी तेज धर्मतरंगों की किसी को कल्पना भी नहीं थी। मोगोक विश्व विश्रुत बरमी (रुबी) माणिक रत्नों की खानों का प्रसिद्ध नगर है। परंतु यहां इतनी प्रभावशाली तरंगों के साथ धर्मरत्न भी विद्यमान है यह देख कर सभी भाव-विभोर हुए।

तीर्थयात्री लौटते हुए पगान के ऐतिहासिक नगर में से गुजरे। उस पुरातन राजधानी और चैत्य नगरी का गहरा प्रभाव यात्रियों के मन पर पड़ना स्वाभाविक था। सारी मंडली यात्रा की कठिनाइयों को भूल कर अत्यंत आनंद विभोर होकर यांगों लौटी। लोगों ने इस तीर्थयात्रा संबंधी अपने अनुभवों के जो उद्गार प्रकट किये उन्हें सुन-सुन कर मेरा मन प्रसन्नता से भर उठा। भारत लौटने के पश्चात भी इस तीर्थयात्रा का सुखद स्मरण करते हुए लोगों के कृतज्ञताभरे पत्र आ रहे हैं। उन्हें पढ़ कर मन पुलकित होता है। अनेक साधकों का यह आग्रह है कि पवित्र भूमि म्यंमा की ऐसी धर्मयात्रा बार-बार हो। मेरी जन्मभूमि के प्रति लोगों का यह भावभीना आकर्षण देख कर मेरा मन प्रसन्नता से भर उठा। ऐसे समय मुझे अपने सुखद अनुभव की एक महत्त्वपूर्ण घटना याद आयी।

परम पूज्य गुरुदेव के आदेश पर १९६९ में जब मैं धर्मदूत का दायित्व निभाने के लिए भारत आया तो मेरे परम मित्र ऊ ति हान जो कि उस समय विदेशमंत्री थे और कर्नलमौं मौं खा जो कि उद्योग का विभाग संभाले हुए थे, इन दोनों के सत्प्रयत्नों से और जनरल नेविन की उदार अनुमति से मुझे पासपोर्ट मिला, जो कि अन्यथा दुर्लभ था। इसी कारण भारत आकर मैं अपने माता-पिता के साथ-साथ अन्य लोगों को विपश्यना सिखाने का पहला शिविर लगा सका। उसके बाद यह धर्मगंगा भारत के कोने-कोने में प्रवाहमान हो उठी।

पहले ही वर्ष में भारतीयों के अतिरिक्त अनेक विदेशी भी इन शिविरों में शामिल होने लगे। पूज्य गुरुदेव की प्रबल इच्छा थी कि भारत में इस विद्या का पौधा लगा देने के बाद इसे सारे विश्व में प्रसारित करना है। जो विदेशी इन शिविरों में सम्मिलित हुए, उनमें से अनेक यह आग्रह करने लगे कि मैं उनके देशों में जाकर उनके परिवार को, मित्रों को तथा अन्य अनेक लोगों को इस पावन धर्मशिक्षा से लाभान्वित करूं। बड़ी संख्या में वहां के लोग भारत नहीं आ सकते थे। मेरे एक के जाने से अनेकों का कल्याण स्पष्ट था। गुरुदेव की आज्ञा भी स्पष्ट थी। मैं स्वयं भी विदेशों में धर्मदूत का कार्य करने के लिए उत्सुक था। परंतु लाचारी थी। मुझे जो बर्मी पासपोर्ट मिला था उसमें केवल भारत का एंडोर्समेंट था। याने मैं बरमी नागरिक के रूप में केवल भारत की ही यात्रा कर सकता था। अन्य किसी देश की नहीं। मैंने अपने पासपोर्ट पर अन्य देशों का नाम दर्ज करवाने के लिए स्थानीय बर्मी दूतावास को आवेदन पत्र भेजा लेकिन उन्होंने अपनी असमर्थता प्रकट की। मेरे मित्र ऊ ति हान ने कहा कि मैं तत्कालीन बर्मी सरकार को अपील चढ़ाऊं। सौभाग्य से उस समय मेरा मित्र कर्नलमौं मौं खा प्रधान मंत्री था। मैंने अपील चढ़ाई लेकिन उसकी अपनी कठिनाई थी। सरकार अपने पूर्व निर्णयों से बँधी थी। मुझे एंडोर्समेंट नहीं मिल सके। ऊ ति हान मेरी अपील लेकर जनरल नेविन से भी मिला, जो कि तब अवकाश ले चुका था। लेकिन कोई बात नहीं बनी।

ऊ ति हान और कर्नलमौं मौं खा दोनों मेरे घनिष्ट मित्र थे। जनरल नेविन के प्रथम शासन में एक बार भारत और दूसरी बार रूस तथा अन्य पूर्वी यूरोपियन देशों से व्यापारिक समझौते करने के लिए उस समय के वाणिज्य मंत्री ऊ ति हान के नेतृत्व में जो सरकारी प्रतिनिधि मंडल गया था, उसका एक सदस्य कर्नलमौं मौं खा भी था। दोनों ही यात्राओं में व्यापारिक परामर्श के लिए मुझे भी साथ ले जाया गया था। इन दोनों से परिचय तो पहले से था, परंतु अब घनिष्ट हो गया। दोनों ही इस तथ्य को खूब जानते थे कि मुझे राजनीति में कोई रुचि नहीं है। और अब तो धर्मदूत के कार्य में पूर्णतया लग जाने के कारण व्यापार से भी पूर्णतया अवकाश ले चुका हूं। मेरी धर्मसेवा के परिणामों से भी दोनों अत्यंत आह्लादित और प्रभावित थे। अतः दोनों चाहते थे कि मैं विपश्यना विद्या का पावन संदेश अन्य देशों में भी ले जाऊं, लेकिन वे मेरी सहायता करने में असमर्थ रहे। लाचारी थी। अंततः मैंने धर्म संकल्प किया कि दस वर्ष प्रतीक्षा करने तक यदि सरकारी नीति नहीं बदली और एंडोर्समेंट नहीं मिला तो मुझे भारतीय नागरिकता प्राप्त हो ताकि भारतीय पासपोर्ट से विश्व में धर्मदूत की यात्रा कर सकूं। यद्यपि मैं अंतर्मन से यही चाहता रहा कि मुझे बर्मी सरकार एंडोर्समेंट दे। लेकिन उनकी मजबूरी भी खूब समझता था। अंततः धर्मसंकल्प ने काम किया और दस वर्ष पूरे होते-होते मुझे चमत्कारिक ढंग से दो दिनों के भीतर ही भारतीय नागरिकता भी मिली और भारतीय पासपोर्ट भी और मैं तत्काल विश्वयात्रा पर निकल सका।

भारतीय नागरिकता लेने के कुछ समय पहले मुझे विदित हुआ कि बर्मी सरकार की तत्कालीन नीति के अनुसार जो बर्मी नागरिक बर्मी पासपोर्ट पर विदेश गया और वहां उसने अपनी नागरिकता बदल ली तो उसके लिए बर्मा में प्रवेश करने का दरवाजा सदा के लिए बंद हो गया। उसे वहां के लिए किसी प्रकार का भी वीसा नहीं मिलेगा। यह मेरे लिए बहुत दर्दनाक सूचना थी। मैं अपनी मातृभूमि लौटने की स्वतंत्रता से वंचित नहीं रहना चाहता था। दूसरी ओर महत्त्वपूर्ण धर्मदूत के कर्तव्य-पालन का तकाजा था। अतः न चाहते हुए भी मुझे अपने देश

की नागरिकता छोड़नी पड़ी और यह मान कर संतोष करना पड़ा कि संभवतः धर्म की यही मंशा है। विश्व में विपश्यना के प्रसारण का श्रेय विपश्यना के उद्गम देश भारत और विपश्यना के संरक्षक देश म्यंमा दोनों को ही मिलना चाहिए। और यही हो रहा है।

परंतु बार-बार मन में आकांक्षा जागती रही कि मैं किसी प्रकार अपनी मातृभूमि जा सकूं। वहां अपने धर्मबंधुओं से तथा वरिष्ठ भिक्षुओं से मिल कर अपना धर्मबल और धर्मज्ञान बढ़ा सकूं। मुझे विश्वास था कि म्यंमा सरकार देर-सबेर मेरे म्यंमा प्रवेश का प्रतिबंध हटायेगी क्योंकि वह खूब जानती है कि मैंने अपनी नागरिकता व्यापारिक या राजनैतिक जैसे किसी व्यक्तिगत स्वार्थवश नहीं बदली है, बल्कि धर्मसेवा के लिए ही बदली है। इस धर्मसेवा से भारत के साथ-साथ बरमा का भी गौरव बढ़ रहा है। अतः देर-सबेर मातृभूमि लौट सकने का अवसर प्राप्त होगा ही।

धर्म बड़ा बलवान है। ऐसा अवसर अपने आप प्रकट हो गया। मेरे यहां के शिविरों के बारे में कुछ गलतफहमियां उठीं कि मैं भगवान बुद्ध की यह शिक्षा शुद्ध रूप में नहीं सिखा रहा हूं और इसको ले कर कुछ एक भिक्षुओं में असंतोष फैला। दूसरी ओर म्यंमा सरकार को सूचना मिल रही थी कि मैं निर्दोष रूप से धर्मसेवा कर रहा हूं। अतः सरकार ने मुझे आमंत्रित किया ताकि मैं भिक्षुओं के मन में जागी हुई भ्रांति दूर कर सकूं। मैं आह्लादित होकर अपनी जन्मभूमि लौटा। मांडले और यांगों के भिक्षु परियत्ति विश्व विद्यालयों में प्रमुख भिक्षुओं के सम्मुख मेरे विनम्र प्रवचन हुए। उन्हें पूर्ण संतोष हुआ। उस यात्रा ने मेरे मन में जो प्रसन्नता जगायी, वह अद्वितीय थी। बाईस वर्षों के लंबे अंतराल के बाद अत्यंत अप्रत्याशित ढंग से अपनी जन्मभूमि में ससम्मान प्रवेश पाने के कारण मेरी यह असीम प्रसन्नता सहज स्वाभाविक थी। जन्मभूमि भी ऐसी जिसने मुझे एक ही नहीं, दो बार जन्म दिया। एक बार इस हाड-मांस के शरीर के रूप में, जब मैं अपनी मां की कोख से जन्मा और जैसे एक पक्षी का सही जन्म अंडे को फोड़ कर बाहर निकलने से होता है, वैसे ही पूज्य गुरुदेव के चरणों में बैठ कर अविद्या की खोल टूटने पर दूसरा जन्म हुआ। वही मेरा सही जन्म था। इस प्रकार जिस मातृभूमि में मैं द्विजन्मा द्विज बना, उसके प्रति मेरे मन में प्यार और आदर का भाव होना स्वाभाविक था। वहां की धरती पर पांव रखते ही मुझे यों लगा कि मैं अपनी मां की सुखद गोद में आ गया हूं। सारा वातावरण धर्म की तरंगों से तरंगित। मुझे वहां असीम धर्मबल प्राप्त हुआ। मेरे धर्मबंधु ऊ टिं यी, ऊ बा फो और ऊ को ले से मिल कर मन बहुत संतुष्ट प्रसन्न हुआ। वहां के परम पूज्य भिक्षु तिपिटकधर मिंगुं सयाडो की वंदना करके, उनके आशीर्वाद और मार्गदर्शन प्राप्त कर बहुत सौभाग्यशाली हुआ। मैं उस यात्रा में अपनी जन्मभूमि की धर्म तरंगों का जो आस्वादन ले सका और उससे जो बल प्राप्त कर सका, उसे याद करता हूं तो मुझे यों लगता है कि अपनी जन्मभूमि के प्रति सहज आकर्षण होने के कारण और लंबे अंतराल के बाद वहां लौट सकने की सुविधा प्राप्त होने के कारण मुझे ऐसी प्रसन्नता का अनुभव हुआ। परंतु अब जबकि मेरे सैकड़ों धर्मपुत्रों और पुत्रियों ने वही अनुभव किया तब मन अत्यंत आश्वस्त हुआ कि सचमुच मेरी जन्मभूमि धर्म की तरंगों से ओतप्रोत है और जो भी साधक जाय, उसको वहां की धर्मतरंगें असीम प्रसन्नता प्रदान करती हैं।

मुझे अपनी मातृभूमि के लोग स्वभावतः अत्यंत प्रिय और भले लगते हैं। कहीं इसमें भी मेरे मन में जागे पक्षपात का भाव तो नहीं है। परंतु ऐसा नहीं है। अब देखा कि सभी तीर्थयात्रियों ने यही निरीक्षण किया। धर्मदेश म्यंमा के नगरों और गांवों में रहने वाले लगभग सभी लोग कितने शांत और सरल हैं। हर अवस्था में सदा प्रसन्न रहते हैं। इंगलैंड की एक धर्मपुत्री इस तीर्थयात्रा से अत्यंत प्रभावित होकर पत्र लिखती है –"The January trip to Burma was so special for me... I think the Burmese are among the nicest, kindest, most humble people in the world." कितना सत्य है। इसी प्रकार एक भारतीय तीर्थयात्री लिखता है, "यह यात्रा किसी देवलोक की यात्रा से कुछ भी कम नहीं थी।.. पूरे म्यंमा में धर्म का इतना व्यापक प्रभाव देखा। वहां के लोग इतने सरल, सीधे और शांत कि हम भारत में रह कर सोच भी नहीं सकते कि कहीं ऐसे लोग भी हो सकते हैं। सारे म्यंमा में जगह-जगह लोगों द्वारा आपका स्वागत और आपके प्रति जो श्रद्धा देखी, उससे बार-बार रोमांच हो उठता था।..." अपनी मातृभूमि और वहां के निवासियों के प्रति ऐसे हृदयोद्गार पढ़-सुन कर भला कौन आनंद विभोर न हो उठेगा! उस देश के लोगों के बारे में इन तीर्थयात्रियों के ऐसे उद्गार सुनता हूं, उनके पत्रों में पढ़ता हूं तो मन गद्गद हो उठता है।

धन्य है म्यंमा की पावन भूमि, जिसने यह विपश्यना विद्या दो सहस्राब्दियों से अधिक समय तक शुद्ध रूप में अपने यहां संभाल कर रखी। हम म्यंमा के साथ-साथ थाईलैंड, श्रीलंका, कंबोडिया और लाओस का भी उपकार मानते हैं, जिन पांच देशों ने भगवान बुद्ध की वाणी को अपने शुद्ध रूप में कायम रखा। लेकिन कल्याणी विपश्यना तो केवल म्यंमा में ही सुरक्षित रही। यदि उस देश के विपश्यी भिक्षु संघ ने इसे जीवित नहीं रखा होता तो आज सारा विश्व इस विद्या के अभाव में अंधकार में ही पड़ा होता।

धन्य है भारत की पावन भूमि जहां ऐसी शुद्ध साधना का उद्गम हुआ। धन्य है बर्मा की पवित्र भूमि, जिसने सारे विश्व को एक बार फिर इस शुद्ध धर्म की पावन ज्योति प्रदान की, शुद्ध धर्म का पथ दिया, विश्व भर के दुखियारे लोगों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया।

कल्याणमित्र,

सत्यनारायण गोयन्का

'धम्म तपोवन' एवं 'सयाजी ऊ बा खिन ग्राम' का निर्माणकार्य आरंभ

धम्मगिरि के समीप 'धम्म तपोवन' का निर्माणकार्य तेजी से आरंभ हो गया है, जिसमें विशेष रूप से २० से ९० दिन के लंबे शिविरों का प्रशिक्षण हुआ करेगा। इसके लिए लगभग ५० एकाकी कमरों की नींव तैयार हो गयी है और कुछ पर छत का काम चल रहा है। धम्म तपोवन में कुल ७५० एकाकी निवास और इतने ही शून्यागारों के निर्माण की योजना है।

इसी प्रकार सयाजी ऊ बा खिन विपश्यना ग्राम में बंगलों का निर्माणकार्य भी आरंभ हो गया है। कई बंगलों की नींव भरी जा चुकी है। जमीन की सफाई और सड़क-निर्माण भी साथ-साथ चल रहा है। वर्षा ऋतु के पहले दोनों योजनाओं का काम यथासंभव अधिक से अधिक पूरा कर लिए जाने की तत्परता है।

निर्माणकार्य में सहयोग देते हुए जो साधक व्यक्तिगत धर्मसेवा अथवा दान द्वारा पुण्यलाभ लेना चाहें, उनके लिए यह पुण्य अवसर उपलब्ध है।

विपश्यना पत्र के स्वामित्व आदि का विवरण

समाचार पत्र का नाम : **"विपश्यना"**

भाषा : हिंदी

प्रकाशन का नियत काल: मासिक (प्रत्येक पूर्णिमा)

प्रकाशन का स्थान : विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३.

मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक का नाम : राम प्रताप यादव

राष्ट्रीयता : भारतीय

मुद्रण का स्थान : अक्षरचित्र, बी-६९, सातपुर, नाशिक-७.

पत्रिका के मालिक का नाम : विपश्यना विशोधन विन्यास,

(रजि. मुख्य कार्यालय) ग्रीन हाऊस, २ रा माला, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई-४०००२३.

मैं, राम प्रताप यादव एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि ऊपर दिया गया विवरण मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है।

राम प्रताप यादव, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक

दि. २५-२-२०००.

नए उत्तरदायित्व : आचार्य

१-२. श्री सत्येंद्रनाथ एवं श्रीमती लाज टंडन,
पालि प्रशिक्षण, बच्चों के शिविर-संयोजक
तथा 'धम्मसोत' की सेवा।
३. डॉ. (श्रीमती) शारदा संघवी एवं
४. श्री शशिकांत संघवी, मुंबई
तुलनात्मक शोध विभाग में सेवा के लिए
5. Dr. J. Khatanbaatar,
to serve 'Dhamma Mongol'

वरिष्ठ स. आचार्य

१-२. श्री सुरेंद्र एवं श्रीमती इंदुबेन शाह, वलसाड
3-4. U Thaung Pe & Daw Myint Myint Tin, UK

नव नियुक्तियां : सहायक आचार्य

१. श्रीमती गिरिजा पी. गणेशन, कोयमबटूर
२. श्री छोटूभाई ईंटवाला, नवसारी
३. श्री हीरजी गाला, वासी
४-५. श्री रोहणीकांत एवं श्रीमती कीर्ति शर्मा, मुंबई
६. श्रीमती शकुंतला गर्ग, हैदराबाद
७. श्री मुरारीलाल केडिया, जल्पाईगुड़ी
८-९. श्री गौरीशंकर एवं श्रीमती हेमलता शर्मा, भोपाल
10. Dr. Shwe Tun Kyaw &
11. Dr. Sann Sann Wynn, U.K.
12-13 Mr. Robert & Mrs. Linda
Warren, U.S.A.

बालशिविर शिक्षक

१-२. श्री रमेश एवं ज्योति संघवी, निलपुर-कच्छ
३. श्रीमती मुक्ताबेन भावसार, निलपुर-कच्छ
४. श्री ज्ञानेश्वर वाघमारे, वर्धा
५. श्रीमती जयश्री खोब्रागडे, वर्धा
६. श्री केशवभाई परमार, अणुमाला
७-८. श्री शंकरराव एवं श्रीमती वनमाला भगत, "
९. श्री मोहनलाल मठीकर, बेडकुवा दूर (सूरत)
१०-११. श्री ओमप्रकाश एवं शारदा माथुरिया, अजमेर
१२. सुश्री बिंदु डांगरिया, राजकोट
१३. श्रीमती कुसुम वि. शाह, मांडवी
१४. श्रीमती जया पी. पटेल, भुज
१५. सुश्री जया कास्ता, मांडवी
१६. श्रीमती ज्येता रो. सावला, मांडवी
१७. श्रीमती फोरम रानावाला, गांधीधाम
१८. श्रीमती रंभा पी. भूडिया, भुज
१९. श्रीमती दमयंती एल. असानी, भुज
२०. श्री दिगंत पी. शाह, मांडवी
२१. श्री अनिलकुमार ठक्कर, गांधीधाम
२२-२३. श्री बी. जगन्नाथ एवं श्रीमती विजयलक्ष्मी, भुज
२४. श्रीमती उमा चौधरी, नागपुर
२५. श्री उद्यान भांगे, नागपुर
२६. श्री अनवीर ढवळे, नागपुर
२७. श्री राहुल तायडे, अकोला
२८. श्रीमती पुष्पा पवार, धुळे
२९. श्री ओमप्रकाश शिरसाट, नाशिक
30. Mr. R.P.C. Rajapakse, Sri Lanka
31. Mrs. Deepthi Tennakoon, Sri Lanka
32. Mrs. M.A. Dhammawathie, Sri Lanka
33. Mrs. Indrani Seneviratne, Sri Lanka
34 Mrs. Eva Sophonpanich, Thailand
35. Mrs. Sayo Medina, Spain
36. Ms Angela Davis, U.K.
37. Mrs. Ann Ashton, U.K.
38. Mrs. Jocelyne Soucasse, France
39. Ms Marie Christine Fromont, France

दूहा धरम रा

बाबो भल बिरमा बस्यो, अनधन भर्‌या भंडार।
तीन रतन अनुपम मिल्या, होवण भव स्यूं पार॥
धरम भोम पर जलमियो, बावै रै परताप।
सुफल जमारो होवियो, मिट्‌या सभी संताप॥
सील समाधि ग्यान का, रतन मिल्या अनमोल।
दुख दाळद सारा मिट्‌या, सुफल हुई या खोल॥
धरम रतन अरजित कर्‌यो, मां बिरमा री गोद।
इब भारत नै बांटतां, मन मावै ना मोद॥
इत गंगा उत रावदी, बवै धरम रो नीर।
जनमन रा दुखड़ा मिटै, दूर हुवै भव-पीर॥
ईं धरती स्यूं धरम री, गंग प्रवाहित होय।
सकल विस्व रा लोग सै, मंगललाभी होय॥

मेसर्स गो गो गारमेंट्स
३१ -४२, भांगवाड़ी शॉपिंग आर्केड,
१ला माला, कालबादेवी रोड, मुंबई - ४००००२.
☎ ०२२- २०५०४१४
की मंगल कामनाओं सहित

दोहे धर्म के

पूर्व पुण्य जाग्रत हुआ, जन्मा बरमा देश।
जन्म हुआ सद्धर्म में, कटें कर्म के क्लेश॥
कैसी सुखद सुहावनी, मां बरमा की गोद।
चारों फल उपजें यहां, उमड़े मन में मोद॥
शुद्ध धरम ऐसा मिला, राग जगे ना द्वेष।
चित्त निपट निर्मल बने, रहे न दुख लवलेश॥
ब्रह्मदेश गुरुवर मिले, जिनका प्रबल प्रताप।
जन जन में जागे धरम, दूर होंय भवताप॥
निर्मल गंगा धरम की, सतत प्रवाहित होय।
भारत-बरमा देश का, सब विधि मंगल होय॥
भारत बरमा देश का, सदियों का संबंध।
सदा महकता ही रहे, यह मधुमय मकरंद॥

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास
• महालक्ष्मी मंदिर लेन, ८ महालक्ष्मी चैंबर्स, २२ वार्डन रोड, मुंबई-४०००२६.
☎-४९२३५२६, • सनस प्लाजा, शॉप ११-१३, १३०२, सुभाष नगर, पुणे-४११००२.
☎-४८६१९०, • दिल्ली-२९११९८५, • पटना- ६७१४४२, • वाराणसी-३५२३३१,
• बैंगलोर-२२१५३८९, • चेन्नई- ४९८२३१५, • कलकत्ता२४३४८७४
की मंगल कामनाओंसहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) ८४०८६, ८४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४३, फाल्गुन पूर्णिमा, २० मार्च, २०००**

वार्षिक शुल्क रु. २०/-, विदेश में US $ 10
आजीवन शुल्क रु. २५०/-, " US $ 100

'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१. Concessional rates of Postage under
Regn. No. AR/NSM-46/2000, Licenced to post without Prepayment

Posting day- **Purnima of Every Month**
Posted at Igatpuri-422403, Dist. Nashik

If not deliverd please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) ८४०७६
फैक्स: (०२५५३) ८४१७६
Website: www.vri.dhamma.org
E-mail: <dhamma@vsnl.com>